चींटा
चींटा

कविता: एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा संकलित
रचना: शोभा मेनन

एकलव्य का प्रकाशन
चींटा-चींटा दूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खट्टा-मीठा दही जमा।
चींटा-चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शक्कर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झटपट वो खा जाएगी।
चींटा-चींटा शक्कर ला,
शक्कर लाकर शरबत बना,
चींटी प्यासी आएगी,
झटपट वो पी जाएगी।
चींटा-चींटा घर बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट-से वो रुक जाएगी।
चींटा-चींटा बाज़ार जा,
शक्कर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झटपट जा, झटपट आ।
चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।
चींटा

चींटा-चींटा धूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खदटा-मीठा दही जमा।

चींटा-चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शाककर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झटपट बो खा जाएगी।

चींटा-चींटा घर बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट-से वो रुक जाएगी।

चींटा-चींटा बाज़ार जा,
शाककर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झटपट जा, झटपट आ।

चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।
चीटा

CHEENTA

कथिता: एकलख के प्राचीन किशोर कार्यक्रम समूह द्वारा संकलित

पत्र: सीमा गेन्ना

@सीमा गेन्ना व एकलख

इस किताब की सामग्री का गैर-व्यापारिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए मुफ्त वितरण हेतु इसी प्रकार के कॉपीलेट विशेष के रूप में इस उद्देश्य का तिलक अद्यतन करें तथा एकलख को सुरक्षित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलख से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2013 / 5000 प्रतिलिपि

कागज: 100 gsm नेपालियाँ व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)


मूल्य: र 30.00

पराग इन्फोटेक, सार रतन टारा ट्रस्ट व नवजाबाई सरात टारा ट्रस्ट, गुम्बई के सिंगर सहयोग से विकसित

प्रकाशक: एकलख

ई-10, शंकर नगर डी.ए. प्रोजेक्ट,
किवाली नगर, शेतापल - 482 016 (म.अ.)
कोने: (0755) 268 0876, 267 1017

www.eklavya.in/books@eklavya.in

पुस्तक: आर. के. सिंहवृत्त प्र. लि., भोपाल, कोने: (0755) 268 7580

इस किताब में उपयोग किया गया कामज्ञ तन्त्रमयी बांधनों से प्रभुता लक्ष्य से बना है।
सौम्या मेनन

नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद से एनिमेशन फिल्म डिजाइन की पढ़ाई। किताबें पढ़ना बेहद प्रिय, साथ ही लेखन व चित्र बनाने का भी शौक। बच्चों के साथ काम करने का मजा ले रही है।
चीटा

चीटा बना रहा है घर, जा रहा है बाजार, ला रहा है गांव और कर रहा है बहुत कुछ। यह सब किया जा रहा है चीटी के लिए।

क्या चीटी खुश होगी?